शिक्षकों के सामूहिक प्रयास विद्यालय को बेहतर बनाते हैं : कविता सिंह

मनीष किशोर

कविता सिंह

जयपुर के सांगानेर ब्लॉक में स्थित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय भाटवाला में कार्यरत कविता सिंह एक प्रतिबद्ध व प्रेरक प्रधानाध्यापिका हैं। एक समय था जब उनका विद्यालय भौतिक सुविधाओं की कमी, घटते नामांकन और कमज़ोर अकादमिक माहौल से जूझ रहा था। इन चुनौतियों के बीच उन्होंने विद्यार्थियों के सीखने पर ध्यान केन्द्रित करते हुए विद्यालय में 'रीडिंग कॉर्नर' की शुरुआत की। और इसके ज़रिए, समुदाय, स्टाफ़ व विद्यार्थियों के साथ मिलकर अकादमिक माहौल व सीखने की संस्कृति को जीवन्त बनाया। साथ ही, उन्होंने समुदाय को विद्यालय से जोड़ा, और साथी शिक्षकों के लिए साझी ज़िम्मेदारी वाला वातावरण बनाया। यह सब जानने के लिए उनसे बात की है अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथी मनीष ने। प्रस्तुत हैं कुछ अंश :

मनीष किशोर : प्रधानाध्यापिका की ज़िम्मेदारी मिलने पर प्राथमिकताएँ क्या थीं? उन पर कैसे काम किया?

कविता सिंह : शुरुआत में विद्यालय की वास्तविक स्थिति समझने पर दो प्रमुख चुनौतियाँ स्पष्ट थीं—पहली, विद्यालय में पेयजल, बिजली, जर्जर भवन जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव; और दूसरी, लगातार घटता हुआ नामांकन। तब नामांकन 105 से घटकर मात्र 70 रह गया था। यह गम्भीर चिन्ता का विषय था। समस्याओं को सुलझाने के लिए स्टाफ़ के साथ मिलकर एक साझी योजना बनाई। एक भामाशाह (दानदाता) के सहयोग से विद्यालय में पानी के लिए बोरिंग करवाई गई, तथा बिजली व्यवस्था सुचारु रखने के लिए स्थानीय लाइनमैन से नियमित सम्पर्क बनाया गया। इससे विद्यालय का भौतिक वातावरण बेहतर हुआ।

नामांकन बढ़ाने के लिए अभिभावकों से बातचीत कर समझने की कोशिश की कि वे बच्चों को विद्यालय क्यों नहीं भेज रहे हैं। उनकी चिन्ता थी कि विद्यालय में पढ़ाई ठीक से नहीं हो रही है। उन्हें भरोसा दिलाया कि शिक्षण की गुणवत्ता में निश्चित ही सुधार किया जाएगा। इसके लिए वे कुछ समय विद्यालय को दें।

शिक्षकों द्वारा कक्षाओं में विद्यार्थियों के साथ स्नेहपूर्ण संवाद, उनकी नियमित उपस्थिति, अच्छी पढ़ाई और सीखने का सकारात्मक माहौल बनाने पर विशेष ध्यान दिया गया। इन प्रयासों से अभिभावकों का विश्वास धीरे-धीरे वापस लौटा। आज विद्यार्थियों का नामांकन 70 से बढ़कर 142 हो गया है।

मनीष किशोर : आपने विद्यालय में सीखने-सिखाने का माहौल तैयार करने में क्या पहल की?

कविता सिंह : इसके लिए कोशिश की गई कि यहाँ हर विद्यार्थी स्वयं को सुरक्षित, सम्मानित और सीखने की प्रक्रिया में शामिल महसूस करे। गतिविधि-आधारित अधिगम (एबीएल) किट के उपयोग से विद्यार्थियों को धीमी या तेज़, अपनी गति से सीखने के अवसर मिलें। वे बिना दबाव के सीख पाएँ। अब शिक्षक, विद्यार्थियों की उपलब्धि की तुलना करने के बजाय उनके प्रयासों की सराहना करते हैं, और बिना भेदभाव सभी को गतिविधियों में शामिल करते हैं।

पुस्तकालय और रीडिंग कॉर्नर को संवाद के मंच के रूप में विकसित किया गया है। यहाँ विद्यार्थी अपनी पसन्द की पुस्तकें पढ़ते हैं, कहानियाँ सुनाते हैं, और समूह में खुलकर चर्चा करते हैं। इससे झिझक वाले विद्यार्थी भी धीरे-धीरे अपनी बात रखने लगे हैं। सुबह की सभा को अभिव्यक्ति से जोड़ा है। विद्यार्थी कविता, नाटक, गीत और अनुभव प्रस्तुत करते हैं। शिक्षक और विद्यार्थी एक दूसरे की बात ध्यान से सुनते हैं और सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं। विद्यालय में विद्यार्थियों ने बाल मेला आयोजित किया। उन्होंने मिलकर योजना बनाई, समूहों में काम बाँटा, खाना तैयार किया, स्टॉल लगाए, और अपनी चीज़ों की मार्केटिंग की। इससे विद्यार्थियों में सहयोग व ज़िम्मेदारी का भाव बना। सभी विद्यार्थी सीखने प्रति उत्साहित हैं। मेरे लिए यही सब एक अच्छे अकादमिक माहौल की पहचान है।

मनीष किशोर : आप सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में समुदाय की भागीदारी को कैसे देखती हैं, और इसे लेकर क्या करती हैं?

कविता सिंह : विद्यालय के विकास में अभिभावकों की सहभागिता को महत्त्वपूर्ण मानती हूँ। मैं उनसे विद्यार्थी की शैक्षणिक प्रगति के साथ उसके व्यवहार, रुचियों, नियमितता पर बातचीत करती हूँ। कोई विद्यार्थी बोलने में झिझकता है या समूह कार्य में पीछे रहता है तब मैं अभिभावकों को घर पर कहानी सुनाने या रोल प्ले जैसे सरल अभ्यास सुझाती हूँ जिससे वे बच्चे के सीखने में शामिल हो पाते हैं।

कई अभिभावक इमारत के रखरखाव व स्वच्छता में श्रमदान करते हैं, बाल सभाओं में बच्चों को सुनते हैं और त्योहारों पर अनुभव साझा करते हैं। निरन्तर संवाद और सहभागिता ने विद्यालय और समुदाय के बीच विश्वास को मज़बूत बनाया है।

मनीष किशोर : आपका विद्यालय में अकादमिक वातावरण सृजित करने की तरफ़ ध्यान कैसे गया, और इसके लिए क्या प्रयास किए?

कविता सिंह : विद्यार्थियों की कमज़ोर शैक्षणिक स्थिति को देखकर विद्यालय में अकादमिक वातावरण बनाने के लिए रीडिंग कॉर्नर की आवश्यकता महसूस हुई। मुझे स्पष्ट था कि विद्यार्थियों को पुस्तकें नियमित उपलब्ध कराने से सकारात्मक बदलाव सम्भव है। इसी बीच अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन द्वारा 'निपुण मोहनपुरा' अभियान की बैठक में रीडिंग कॉर्नर की अवधारणा साझा की गई। बताया गया कि रीडिंग कॉर्नर केवल पुस्तकें रखने की जगह नहीं है, बल्कि यहाँ विद्यार्थियों के लिए एक सहज, सुरक्षित, ख़ुशनुमा व पढ़ने का खुला माहौल होता है जहाँ विद्यार्थी अपनी रुचि की पुस्तकें स्वयं चुनकर पढ़ सकते है।

शिक्षक साथियों के साथ विद्यार्थियों की ज़रूरतों व रीडिंग कॉर्नर बनाने पर चर्चा की। किसी ने विद्यार्थियों के बैठने की व्यवस्था में मदद की तो किसी ने समय सारणी में रीडिंग टाइम शामिल करने का सुझाव दिया। किसी ने पुस्तकालय प्रभारी की भूमिका निभाई, जबकि अन्य साथियों ने कक्षा अनुसार पुस्तकें छँटवाने व रीडिंग कॉर्नर में आकर्षक ढंग से रखवाने में भूमिका निभाई।

चित्र 1 : पुस्तकालय में बाल साहित्य पढ़ते विद्यार्थी

विद्यार्थियों को कक्षा में पुस्तकें ले जाने, अवकाश के समय पढ़ने और घर ले जाने की अनुमति दी गई। शिक्षक विद्यार्थियों से यह अपेक्षा नहीं रखते कि वे पुस्तक का सार लिखें, बल्कि उनसे पूछते हैं, "तुमने क्या पढ़ा, और तुम्हें क्या अच्छा लगा?" इससे विद्यार्थियों की झिझक कम हुई, मौखिक अभिव्यक्ति बेहतर हुई और धीरे-धीरे पुस्तक पढ़ने की दिलचस्पी और ख़ुद पर भरोसा बना। अकादमिक वातावरण में अब विद्यार्थी स्वेच्छा से वहाँ बैठकर पढ़ते हैं।

मनीष किशोर : यह धारणा प्रचलित है कि विद्यार्थी पुस्तकें फाड़ देते हैं, ख़राब कर देते हैं। इसे तोड़ने के लिए क्या किया?

कविता सिंह : हमने प्रार्थना सभा में पुस्तकों के महत्त्व और उनकी देखभाल (जैसे–पुस्तकें ज्ञान का ख़ज़ाना हैं, उन्हें साफ़ हाथों से पढ़ने, थूक न लगाने, गोदागादी नहीं करने, मोड़ने-फाड़ने से बचने और पढ़ने के बाद सही स्थान पर रखने, आदि) पर चर्चा की। विद्यार्थियों को पुस्तकों के रखरखाव की ज़िम्मेदारियाँ दी गईं, जैसे–पुस्तकें व्यवस्थित जमाना, गिनती रखना, क्षतिग्रस्त पुस्तकों को गोंद / टेप लगाकर सुरक्षित करना, आदि। हफ़्ते में एक दिन 'पुस्तक मरम्मत' से सम्बन्धित गतिविधियों को शामिल किया गया।

मनीष किशोर : विद्यार्थियों में पढ़ने-लिखने की आदतों के विकास के लिए क्या प्रयास किए?

कविता सिंह : पढ़ने-लिखने की आदतों के लिए पुस्तकालय व रीडिंग कॉर्नर अहम भूमिका निभाता है। इसके लिए विद्यालय में चार बातें सुनिश्चित कीं। पहली, विद्यार्थियों को बहुत सारी अच्छी पुस्तकें उपलब्ध कराई गईं। दूसरी, स्वाध्याय के लिए अपनी रुचि और पसन्द के अनुसार पुस्तक चुनने की स्वतंत्रता दी गई। तीसरी, उन्होंने जो पढ़ा है, उसे साथियों के साथ साझा करने के मंच उपलब्ध कराए। और चौथी बात, पढ़ी गई सामग्री से उन्होंने क्या सीखा-समझा, उसे अपनी भाषा और शब्दों में मौखिक व लिखकर अभिव्यक्त करने के मौक़े दिए।

मनीष किशोर : रीडिंग कॉर्नर बनाने की प्रक्रिया कैसी रही? तैयारी के लिए आपने क्या-क्या किया?

कविता सिंह : एक शिक्षिका को पुस्तकालय प्रभारी बनाया गया। पुस्तकों का वर्गीकरण विद्यार्थियों की आयु, भाषा, स्तर और रुचि के आधार पर किया गया। कक्षा 1 व 2, 3 से 5 और 6 से 8 के लिए अलग-अलग पुस्तकें तय कीं। चयन में सहज-सरल भाषा, चित्रों की प्रभावशीलता, कथानक की रोचकता और स्थानीय व विद्यार्थियों के जीवन सन्दर्भ वाली पुस्तकों को प्राथमिकता दी गई। पुस्तकों का चयन शिक्षकों ने सामूहिक रूप से पुस्तकें पढ़कर किया। कुछ अच्छी पुस्तकें हैं–*महागिरी, नन्हे-मुन्ने गीत, तीन पूँछ वाला चूहा, बिल्ली के गले में घण्टी कौन बाँधेगा, बस की सैर,* आदि। दूसरे कालांश को रीडिंग कॉर्नर घण्टी के रूप में

तय किया गया है। इसमें पढ़ने के बाद विद्यार्थियों से रचनाओं पर बातचीत और पुस्तक-आधारित गतिविधियाँ की जाती हैं।

मनीष किशोर : शिक्षकों और विद्यार्थियों को रीडिंग कॉर्नर से जोड़ने के लिए आपने कौन-सी रणनीतियाँ अपनाईं?

कविता सिंह : शिक्षकों की समझ, और विभाग द्वारा निर्देशित 'प्रखर राजस्थान अभियान' ने शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को रीडिंग कॉर्नर से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। विद्यार्थियों को पठन-स्तर के अनुसार चार उपसमूहों—बीज, अंकुरण, पुष्पन और फलन—में विभाजित किया गया। हर स्तर के विद्यार्थियों के लिए चित्र पुस्तकों, छोटी कहानियों, कविताओं और सरल भाषा वाली पुस्तकों को अलग-अलग समूहों में रखा गया ताकि वे अपनी क्षमतानुसार पुस्तक चुन सकें। शुरू में शिक्षकों ने विद्यार्थियों के साथ बैठकर पुस्तकें देखीं, चित्रों पर बातचीत की, कहानी-कविताएँ सुनाईं, इससे वे धीरे-धीरे ख़ुद पढ़ने के लिए प्रेरित होने लगे।

विद्यार्थियों के साथ तरह-तरह की पुस्तकों पर लगातार काम करने से शिक्षकों में भी रीडिंग कॉर्नर की पुस्तकों के प्रति स्वाभाविक रूप से दिलचस्पी बढ़ी है। इनमें *दिवास्वप्न, बच्चों के लिए खेल क्रियाएँ, तोत्तोचान द लिटिल गर्ल एट द विंडो* जैसी पुस्तकें शामिल हैं।

मनीष किशोर : पढ़ने-लिखने की आदतों के विकास के लिए किए गए प्रयासों से शिक्षकों के शिक्षण में और विद्यार्थियों के सीखने में किस तरह के बदलाव नज़र आए?

कविता सिंह : बदलाव के लिए पुस्तकों के चयन में भी ख़ास ध्यान दिया गया। भाषा में बेहतरी लाने के लिए कहानियाँ-कविताएँ पढ़ने-सुनाने के बाद छोटी-छोटी बातचीत को बहुत महत्त्व दिया। पूछा गया कि उन्हें कहानी में क्या अच्छा लगा, कौन-सा पात्र पसन्द आया और क्यों? इससे विद्यार्थियों ने बोलना शुरू किया और धीरे-धीरे उनकी अभिव्यक्ति अधिक स्पष्ट और आत्मविश्वासी होती गई।

कल्पनाशीलता व रचनाशीलता के लिए सरल गतिविधियाँ की गईं, जैसे—कहानी का नया अन्त या शीर्षक सोचना, रचनाओं पर चित्र बनाना, किसी पात्र की तरह बात करना, आदि। कुछ विद्यार्थियों ने तो पढ़ी हुई कहानियों से प्रेरित होकर अपनी छोटी कविताएँ और क़िस्से लिखने व सुनाने शुरू कर दिए। परिणाम यह हुआ कि उन्होंने धीरे-धीरे ख़ुद पुस्तकें उठानी शुरू कीं, घर ले जाने की इच्छा जताई, और ख़ाली समय में पढ़ने लगे। उनमें स्वाध्याय, पठन कौशल, भाषा, व्यवहार और आत्मविश्वास में धीरे-धीरे सुधार दिखाई देने लगा। कई विद्यार्थी ख़ुद याद दिलाते हैं कि उन्हें आज पढ़ने का समय चाहिए।

इतना ही नहीं, शिक्षकों द्वारा निरन्तर विद्यार्थियों व बड़ों की साहित्यिक व शिक्षा उपयोगी पुस्तकें पढ़ने की आदत बनने से उनमें रीडिंग कॉर्नर के लिए अच्छी पुस्तकों के चयन व उनके उपयोग करने की दृष्टि बेहतर हुई है। विषयों को पढ़ाने के नज़रिए में, विद्यार्थियों के साथ व्यवहार, उनसे संवाद व सवाल पूछने की कला में भी उल्लेखनीय सकारात्मक बदलाव दिखाई देते हैं।

मनीष किशोर : आपको इन प्रयासों में किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

कविता सिंह : शुरुआत में देखा गया कि कुछ विद्यार्थी पुस्तकें चुनने में संकोच करते थे, कुछ शिक्षक रीडिंग कॉर्नर को अतिरिक्त गतिविधि मानकर नियमित समय नहीं दे पा रहे थे। सीमित संसाधनों के कारण अच्छी पुस्तकों की पर्याप्त संख्या में उपलब्धता और रखरखाव भी मुश्किल था। चुनौतियों के समाधान के लिए हमने समय सारणी में लचीलापन रखा। कभी प्रार्थना के बाद, कभी अवकाश से पहले या कक्षा के अन्त में 10-15 मिनट का पठन समय तय किया। आपस में यह स्पष्ट किया कि रीडिंग कॉर्नर कोई अतिरिक्त काम नहीं, बल्कि भाषा और समझ के विकास का स्वाभाविक माध्यम है।

मनीष किशोर : विद्यालय में ऐसा सकारात्मक माहौल कैसे बनाया जिससे शिक्षक सहजता से आपके प्रयासों में योगदान दे सके?

कविता सिंह : विद्यालय में विश्वास, संवाद और सहभागिता का माहौल बनाया। कोशिश रही कि शिक्षक हर निर्णय में ख़ुद को सहभागी महसूस करें। हर विषय पर खुली चर्चा की शुरुआत की। सभी शिक्षकों से यह पूछा गया कि रीडिंग कॉर्नर को कैसे बेहतर किया जा सकता है। किसी शिक्षक ने पुस्तकों के स्तर तय करने का सुझाव दिया, तो किसी ने समय सारणी में रोज़ 15 मिनट की पठन गतिविधि जोड़ने की बात कही। ज़िम्मेदारियाँ भी आपसी सहमति से बाँटी गईं। इससे शिक्षकों को सन्देश मिला कि यह पहल किसी एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि पूरी टीम की है।

इसी तरह नामांकन बढ़ाने में किसी ने अभिभावकों से सम्पर्क का दायित्व सँभाला। जब योजनाएँ शिक्षकों की सहमति से बनीं तब उनमें स्वाभाविक ज़िम्मेदारी और जुड़ाव भी दिखाई दिया। यह भी सुनिश्चित किया कि शिक्षकों के प्रयासों को समय-समय पर सराहा जाए। मैंने एक ऐसा सुरक्षित और भरोसेमन्द वातावरण बनाने पर विशेष ध्यान दिया जहाँ शिक्षक बिना किसी डर या संकोच के अपनी समस्याएँ, चुनौतियाँ और ज़रूरतें साझा कर सकें, तभी उनका भरोसा बढ़ता है, और प्रयासों में सक्रियता से जुड़ते हैं।

मनीष किशोर छह वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, राजस्थान में कार्यरत हैं। वे एसोसिएट प्रोग्राम के माध्यम से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़े हैं। प्राथमिक विद्यालय स्तर पर हिन्दी एवं गणित विषयों में कार्य करते हैं, तथा उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय में भी कार्यरत हैं।

सम्पर्क : manish.kishor@azimpremjifoundation.org